श्रम विभाग

दिनांक 1 फरवरी, 1985

सं आो. वि./एफ.डी./178-84,3948---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. शर्वा निर्सिंग होम. 5 के-10, एन०आई०टी, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री बोना तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्येपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, सब, सीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के वण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल सके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं. 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये अधिस्चना सं. 11495-जी-अस-38-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अस न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्वकों तथा अमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बीना की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो. वि/एफ.डो./180-84/3955.—वृक्ति हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० यूनाईटेड ट्रेडर्ज इंजीनियरिंग वर्कस, 1-सो/6. एन.आई.टी., फरीदाबाद, के श्रीमक श्री अमर लाल तथा उसके प्रवस्त्रकों के मध्य इसमें इसके बाद निधित मामले में कोई अधिरोणिक विवाद है;

भीर चूंजि हरियाणा ने राज्यपाल विवाद को ध्यायनिर्णय हे तु निर्दिष्ट करना वांछनीय तमलते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्धोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधार। (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तथों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 5415-3-धम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं० 11495-जी-धम-88/श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधीन गीठत श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनियम के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री अमर लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं मो ति एक डो | 183-84 | 3932 - वृंकि हरियाणां के राज्यशान की राज है कि मैं कहती वन स्टोल टण्डिया प्राव्लिक, प्लाट नंव 176. सैन्टर-21, करोदाबाद, के श्रीमक श्री मुरारी जज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निष्ठित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब. श्री द्योगिक विवाद प्रवित्यम, 1947, की घारा 10 को उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अभ/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिपूचना सं. 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अन त्यायालय, फरोदावाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रयवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री मुरारी जज की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?